संपादकीय

महिला लेखन की शाहनी

आरंभिक दौर में कविता लिखती कृष्णा सोबती ने कविता को छोडकर कथा के क्षेत्र में अपना स्थान मज़बूत किया। सन् 1944 में 'नफीसा' नामक कहानी के साथ उन्होंने कहानी लेखन शुरू किया। सन् 1958 में उनका प्रथम उपन्यास 'डार से बिछुडी' का प्रकाशन हुआ। उसके बाद बोल्ड औरत की कथा 'मित्रो मरजानी' का प्रकाशन 1966 में हुआ। उनका अन्तिम उपन्यास 'चन्ना' मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ, याने अन्तिम समय तक वे रचनारत रहीं थीं। उनकी अन्य रचनाएँ हैं - 'यारों के यार', 'तिन पहाड', 'सूरजमुखी अंधेरे के', 'ज़िन्दगीनामा', 'ऐ लडकी', 'दिलो दानिश', 'समय सरगम', 'गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिन्दुस्तान', 'जैनी मेहरबान', 'बादलों के घेरे', 'हम हशमत', 'सोबती एक सोहबत', 'शब्दों के आलोक में', 'सोबती-वैद संवाद', 'लद्दाख़ : बुद्ध का कमण्डल', 'मुक्तिबोध : एक व्यक्तित्व : सही की तलाश में', 'लेखक का जनतंत्र' तथा 'मार्फत दिल्ली'।

कृष्णा सोबती की प्रारंभिक रचनाओं में उपनिवेश आधुनिकता का असर दिखाई देता है। लेकिन 'मित्रो मरजानी' तक आते-आते उनकी स्त्रीवादी दृष्टि और रचना दर्शन स्वस्थ एवं सुदृढ़ हो गए। उसी के साथ वे महिला लेखन की शाहनी बनने लगीं। अपनी रचनादृष्टि को स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा है कि "नागरिक के रूप में समाज का अभिन्न होने के नाते हमारी सामाजिक समस्याएँ और चुनौतियाँ हमारे होने की प्रमुख शर्त है। यह उत्तरदायित्व साहित्य ने हमें विरासत के रूप में सौंपा है।" इस प्रकार वे रचना के केन्द्र में देशी यथार्थ को प्रतिष्ठित करने लगीं। 'ज़िन्दगीनामा' उपन्यास इसका ज्वलंत प्रमाण है। इसमें वे पंजाब के सामाजिक-सांस्कृतिक इतिहास को समग्रता के साथ प्रस्तुत करती हैं। अपने इतिहास दर्शन के बारे में उपन्यास में वे लिखती भी हैं - "इतिहास जो नहीं है और इतिहास जो है वह नहीं जो हुकूमतों के तख्तगाहों में प्रमाणों और सबूतों के साथ ऐतिहासिक खातों में दर्ज कर सुरक्षित कर दिया जाता है। बल्कि वह जो लोकमानस की भागीरथी के साथ-साथ बहता है, पनपता और फैलता है और जन सामान्य के सांस्कृतिक पुख्तापन में जिन्दा रहता है।" पंजाब में, जो आज पाकिस्तान में है, जन्मी कृष्णा सोबती विभाजन के दौरान स्वतंत्र भारत पहूँचती हैं, याने भारत विभाजन उनके लिए भोगा हुआ यथार्थ है। ज़िन्दगीनामा उपन्यास के साथ तीन-चार कहानियों तथा अन्य संदर्भों में वे इसका साफ उल्लेख करती भी हैं। 'सिक्का बदल गया, 'मेरी माँ कहाँ?', 'डरो मत, मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा' जैसी कहानियों में सांप्रदायिक दंगे, आगजनी, लूट-पाट, हत्या, बलात्कार, पलायन, शरणार्थी होने का दर्द आदि को अभिव्यक्ति मिली हैं।

कृष्णा जी की स्त्री (सुमित्रा बंती) हाड-मांस के साथ ही पूर्ण होती है। स्त्री की जैविक मांगों को अनिवार्य मानती लेखिका उसकी यौनिकता को प्रमुख स्थान देती हैं, इसीलिए साहित्य जगत में वे बोल्ड औरत की लेखिका बन जाती हैं। परिवार में मित्रो अपने सहज मानव अधिकार के लिए लडती रहती है। परम्परागत सामाजिक विधि-निषेधों की जकडन में पिसते संयुक्त परिवार स्त्री को सम्मानपूर्ण

जीवन बिताने की जगह नहीं देता है। वहीं अपनी जगह के लिए संघर्ष करती मित्रो निर्णायक समय में किसी की अनुमति के बिना ही परिवार को थाम लेती है। कृष्णा जी की स्त्री, चाहे लडकी हो या बूढी औरत, अपने अधिकारों के साथ किसी भी तरह के समझौते के लिए तैयार नहीं होती है। जीवन के अन्तिम समय तक कृष्णा सोबती का रचना दर्शन यही रहा। कथेतर मद्य में भी यही विचार कौंधता रहता है।

अंत में इस अंक के सभी लेखकों को अपने सहयोग के लिए शुक्रिया अदा करता हूँ। यह अंक कुछ समय के बाद आ रहा है, अगले अंक जल्द ही आ जायेगा।

पी. रवि

अनुक्रम

	संपादकीय		
1.	समय का अतिक्रमण करती रचनाएँ	सिनीवाली शर्मा	7
2.	समकालीन स्त्री लेखन के संदर्भ में कृष्णा सोबती	सरफराज अह्मद	9
3.	कृष्णा सोबती के अप्रतिम स्त्री-चरित्र	अनुराधा सिंह	15
4.	नारी वृत्त संचार की वाहिका	अरुण शीतांश	19
5.	रत्ती, मित्रो, अम्मु...	प्रभाकरन हेब्बार इल्लत	24
6.	*डार से बिछुड़ी* में संघर्षित स्त्री जीवन	दिव्या रामचन्द्रन	32
7.	कथा के कलेवर में एक संपूर्ण नाटक : *मित्रो मरजानी*	प्रज्ञा	37
8.	*सूरजमुखी अंधेरे के* उपन्यास में स्त्री अस्मिता की तलाश	नुसरत जबीं सिद्दिकी	46
9.	ऐतिहासिक तथ्य और वैयक्तिक कल्पना *ज़िन्दगीनामा* में	मिनी ई.	52
10.	*ऐ लड़की* : खुद से जिरह और 'व्यक्ति' की रचना की गाथा	सुमन केशरी	56
11.	*ऐ लड़की* : स्त्री का अन्तिम बयान	सिन्धु ए.	61
12.	*समय सरगम* : वृद्धजीवन की बारीकियों की तलाश	आर. सेतुनाथ	65
13.	गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिन्दुस्तान : मौत के मतदान का दस्तावेज	रामप्रकाश	69
14.	*चन्ना* : एक रूढ़िमुक्त स्त्रीत्व की परिकल्पना	लेखा एम.	81
15.	सकारात्मक सोच में लिपटा भविष्य का अक्स : कृष्णा सोबती की कहानियाँ	नीलाभ कुमार	85
16.	*बादलों के घेरे* : मानव-मन के घेरों में उलझी कहानियाँ	सुप्रिया पी.	93
17.	*सिक्का बदल गया* : विभाजन के पीछे पंजाब की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था की पड़ताल की कहानी	ज्योति चावला	99
18.	संवाद की रचनात्मकता बनाम रचनात्मकता का संवाद	बी. विजयकुमार	111
19.	लेखन की जनपक्षधरता	गणपत तेली	116
20.	हशमत का दोस्ताना	सुमा एस.	120
21.	सही की तलाश में दो व्यक्तित्व	राजेश्वरी के.	124